

द्वारा 27 अप्रैल को बीबीए की परीक्षा कराए बिना ही परीक्षा परिणाम घोषित कर दिया, 3 मई शनिवार को आयोजित बीएससी की परीक्षा में वीरांगना रानी दुर्गावती के लिए "मकबरा" शब्द का उपयोग किया गया, जो न केवल ऐतिहासिक रूप से गलत है, बल्कि हमारी सांस्कृतिक भावनाओं के भी विरुद्ध है क्योंकि रानी दुर्गावती एक हिन्दू वीरांगना थीं, हिन्दू परंपरा में "मकबरा" नहीं होता एवं इस प्रकार का कृत्य वीरांगना रानी दुर्गावती जी का घोर अपमान है इसी तरह 7 मई बुधवार को बीए सेकंड ईयर की आयोजित परीक्षा में विद्यार्थियों को ऑउट ऑफ सेलेब्स प्रश्न पत्र थमा दिया गया जिसे विश्वविद्यालय को बीच एग्जाम पेपर अघोषित तौर पर स्थगित करना पड़ गया इसी प्रकार परीक्षा देने के बाद भी छात्रों को जीरो नंबर थमा दिए जाते हैं जो कि छात्रों के भविष्य से खिलवाड़ है और विश्वविद्यालय की घोर लापरवाही को दर्शाता है परीक्षा देने के बाद भी छात्रों को जीरो नंबर थमा दिए जाते हैं। परीक्षाएं होने के महीनों बाद भी परिणाम घोषित नहीं होते हैं।

राजेश वर्मा द्वारा विश्वविद्यालय की महिला सहायक कुलसचिव के साथ अशोभनीय आचरण और अभद्र इशारे भी किए हैं जो महिला सम्मान और कार्यस्थल की गरिमा को ठेस पहुंचाते हैं जिसकी शिकायत भी गई है तथा राज्य महिला आयोग ने भी जिला कलेक्टर को पत्र भेज कर उचित जांच कर कार्रवाई की मांग की है कुलगुरु की यह निष्क्रियता और अनियमितताएं विश्वविद्यालय प्रशासन और छात्रों दोनों के लिए गंभीर चिंता का विषय हैं।

रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जो कभी शिक्षा और गरिमा का प्रतीक था आज अपने नेतृत्व की अक्षमता और अनैतिक आचरण के कारण शर्मसार हो रहा है। कुलगुरु द्वारा बरती जा रही इतनी बड़ी लापरवाही और उन पर लगे महिला अधिकारी के साथ दुर्व्यवहार के आरोप न केवल महिला सम्मान पर गहरा आघात हैं बल्कि यह हमारे समाज की नींव को भी कमजोर करता है।

अतः आपसे हमारा विनम्र अनुरोध है कि कुलगुरु को तत्काल निलंबित करते हुए निष्पक्ष रूप से स्वतंत्र जांच कराई जाए साथ ही विश्वविद्यालय में छात्रों और कर्मचारियों के हित में एक योग्य, नैतिक और अनुभवी कुलगुरु की शीघ्र नियुक्ति की जाए।

धन्यवाद।

भवदीय
Anurag Shukla
अनुराग शुक्ला


शफी खान